ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

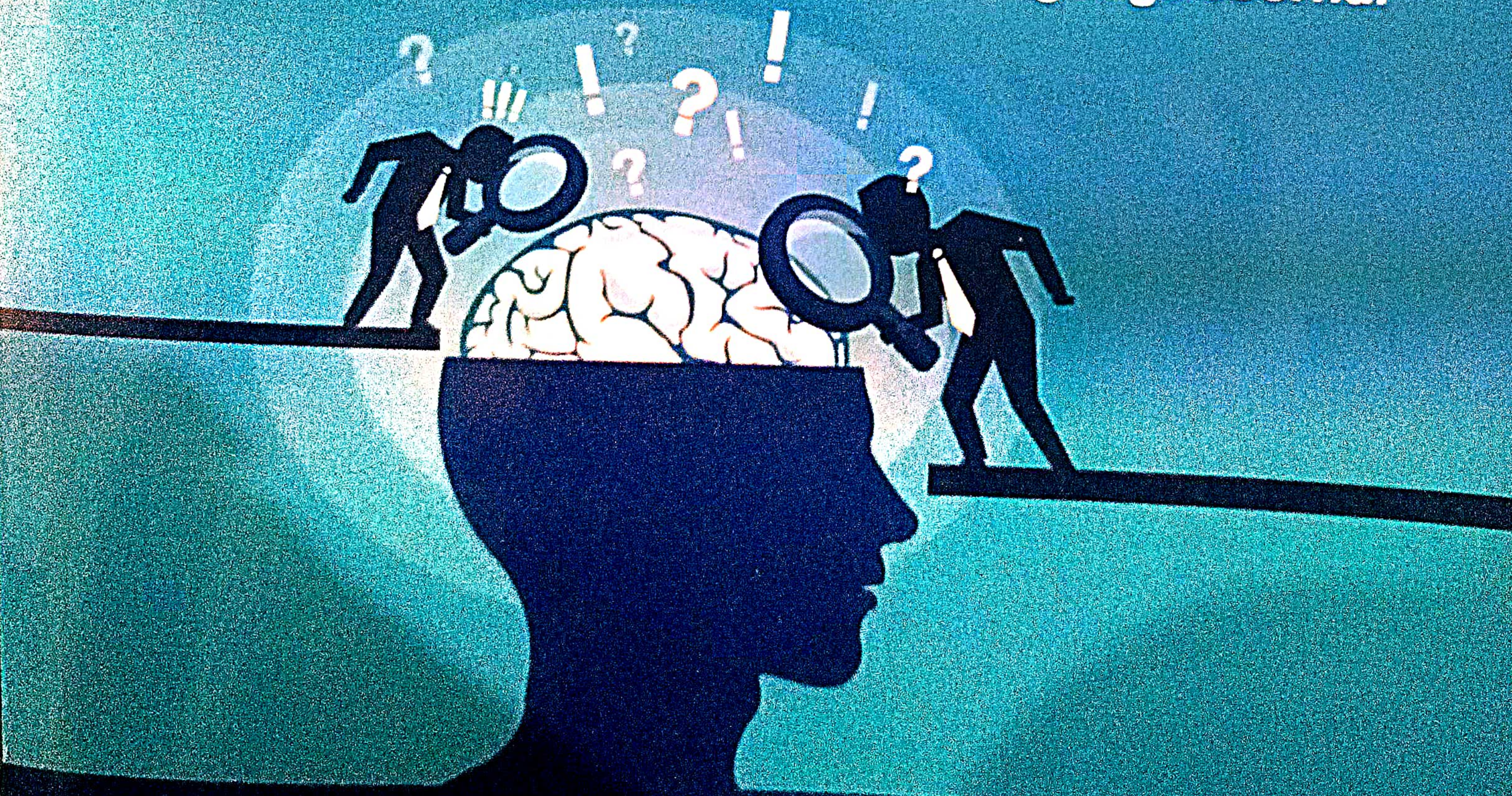

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

कृषि के अन्तर्गत नवीन तकनीकों का उपयोग एवं कृषकों की आय पर उसका प्रभाव: मेरठ जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन–ओम प्रकाश 3488

समावेशन की राह में बाधा- 'अभिभावक, शिक्षक एवं समाज की मनोवृत्ति के सन्दर्भ में'–डॉ० मोनिका सरोज; सुधीर कुमार रंजन 3494

सोशल मीडिया का आज की युवा पीडी पर प्रभाव–सविता देवी; डॉ० सुमन 3498

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधान मंत्री आवास योजना: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–शक्ति शंकर कुमार 3500

राष्ट्रीय आन्दोलन और जवाहर लाल नेहरू - एक संक्षेपण–डॉ० श्रुति कुमारी 3504

भारत में गाँवों के विकास के लिए कृषि की उन्नति वर्तमान आवश्यकता–ओंकार यादव 3507

हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान–डॉ० कनुभाई बिछिया भाई निनामा; ओमप्रकाश 3510

'गुड़िया भीतर गुड़िया': स्त्री अस्मिता की एक खोज–पूनम जायसवाल 3514

बस्तर में आदिवासियों का परलकोट विद्रोह: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन–डॉ० डिश्वर नाथ खुटे; ईश्वर लाल 3517

मराठा कालीन छत्तीसगढ़ की सामाजिक स्थिति का ऐतिहासिक पुनरावलोकन (सन 1741 से 1818)–डॉ० डिश्वर नाथ खुटे; ममता ध्रुव 3525

भारतीय चिन्तन परम्परा में तर्कस्वरूप–मीरा द्विवेदी; जोरावर सिंह 3534

संस्कृतसाहित्ये श्रीबोधिसत्त्वचरितस्य महत्वम्–मधुसूदन सती 3538

महाविद्यालयीय विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के मध्य सहसम्बन्धात्मक अध्ययन–डॉ० प्रेम चन्द यादव; राजीव सिंह 3540

भारत में शिक्षक शिक्षा: कुछ नीतिगत मुद्दे और चुनौतियाँ–कमल चन्द्र गहतोड़ी; डॉ० कल्पना पाटनी लखेड़ा 3544

समाज वैज्ञानिक शोध में सामाजिक सर्वेक्षण का महत्व–डॉ० हरबीर सिंह डागुर 3550

जगदीप दुबे हुन्दे 'तितलियां' क्हानी संग्रेह् च प्रयुक्त अंग्रेजी ते फारसी शब्दावली–शगुफ्ता चौधरी 3556

ग्रामीण भारत का शैक्षिक एवं आर्थिक पिछड़ापन–बलभद्र बिरुवा 3557

काव्यप्रकाश की लीला टीका एवं उसकी पाण्डुलिपियां–भारतेन्दु पाण्डेय; गिरिराज 3560

कुमाऊँ का अनुपम जलस्त्रोत: नौला (भूतल के जल)–हंसा वर्मा; डॉ० सरोज वर्मा 3565

बेरोजगारी समस्या के समाधान हेतु मनरेगा कार्यक्रम–सुनीता कुमारी 3570

माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता का कार्य संतुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन–ज्योति विजय; डॉ० चंद्रकान्त शर्मा 3576

भारतीय संसदीय लोकतंत्र का बदलता स्वरूप: एक विश्लेषण–मनीषा 3580

कारू नाडु (उत्तरी कर्नाटक) को पृथक राज्य बनाने की मांग (उत्तरी कर्नाटक से विश्वासघात की कहानी)–सर्वजीत सिंह राणा; डॉ० अखिल गोयल 3583

दुकानों में प्रोसेस्ड पैकेज्ड भोजन के विभिन्न प्रकारों की उपलब्धता का अध्ययन: (पटना क्षेत्र के संबंध में)
–कुमारी सुषमा श्रीवास्तव; प्रो0 (डॉ०) अंजु श्रीवास्तव 3591

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विधार्थीयों की नैतिक मूल्यों पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव पर शोध
–श्रीमती मोहनी सिन्हा; डॉ० रजनी डिवाकर राव सिवणकर 3595

महासमुन्द क्षेत्र के हायर सेकंण्डरी स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता अध्ययन–हेमन्त कुमार खटकर; डॉ० रेखा नरेन्द्र जिभकाटे नवखरे 3600

महात्मा फुले की सामाजिक न्याय अवधारणा–मोनिका काकोडिया 3603

असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के मानवाधिकारों के संरक्षण में केन्द्रीय सरकार की भूमिका का एक अवलोकन
–नीतेश कुमार चतुर्वेदी; प्रो० सुदर्शन वर्मा 3607

भारत में प्राकृतिक आपदा के समय राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान की भूमिका का अध्ययन–संदीप सेन 3612

पश्चिमोतर भारत में पारसियों का आगमन तथा भारतीय समाज पर उनका प्रभाव–सारिका दुबे 3615

मध्यप्रदेश में भारतीय होटल उद्योग में लागू सेवा गुणवत्ता मॉडल का अध्ययन–डॉ० डी०एन० पुरोहित; श्रीमति शीतल तिवारी 3620

भारत में ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा–रूबी सिंह; डॉ० वी० के० गैलत 3629

दिल्ली सल्तनत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति–डॉ० स्वर्ण मणि 3632

भारत और सिंगापुर के सांस्कृतिक संबंध: एक ऐतिहासिक अवलोकन–आशा कुमारी सिन्हा; डॉ० सुनीता शर्मा 3636

कृषि के अन्तर्गत नवीन तकनीकों का उपयोग एवं कृषकों की आय पर उसका प्रभावः मेरठ जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन–ओम प्रकाश 3488

समावेशन की राह में बाधा- 'अभिभावक, शिक्षक एवं समाज की मनोवृत्ति के सन्दर्भ में'–डॉ० मोनिका सरोज; सुधीर कुमार रंजन 3494

सोशल मीडिया का आज की युवा पीडी पर प्रभाव–सविता देवी; डॉ० सुमन 3498

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधान मंत्री आवास योजनाः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–शक्ति शंकर कुमार 3500

राष्ट्रीय आन्दोलन और जवाहर लाल नेहरू - एक संक्षेपण–डॉ० श्रुति कुमारी 3504

भारत में गाँवों के विकास के लिए कृषि की उन्नति वर्तमान आवश्यकता–ओंकार यादव 3507

हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान–डॉ० कनुभाई बिछिया भाई निनामा; ओमप्रकाश 3510

'गुड़िया भीतर गुड़िया': स्त्री अस्मिता की एक खोज–पूनम जायसवाल 3514

बस्तर में आदिवासियों का परलकोट विद्रोहः एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन–डॉ० डिश्वर नाथ खुटे; ईश्वर लाल 3517

मराठा कालीन छत्तीसगढ़ की सामाजिक स्थिति का ऐतिहासिक पुनरावलोकन (सन 1741 से 1818)–डॉ० डिश्वर नाथ खुटे; ममता ध्रुव 3525

भारतीय चिन्तन परम्परा में तर्कस्वरूप–मीरा द्विवेदी; जोरावर सिंह 3534

संस्कृतसाहित्ये श्रीबोधिसत्त्वचरितस्य महत्वम्–मधुसूदन सती 3538

महाविद्यालयीय विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के मध्य सहसम्बन्धात्मक अध्ययन–डॉ० प्रेम चन्द यादव; राजीव सिंह 3540

भारत में शिक्षक शिक्षाः कुछ नीतिगत मुद्दे और चुनौतियाँ–कमल चन्द्र गहतोड़ी; डॉ० कल्पना पाटनी लखेड़ा 3544

समाज वैज्ञानिक शोध में सामाजिक सर्वेक्षण का महत्व–डॉ० हरबीर सिंह डागुर 3550

जगदीप दुबे हुन्दे 'तितलियां' क्हानी संग्रेह् च प्रयुक्त अंग्रेजी ते फारसी शब्दावली–शगुफ्ता चौधरी 3556

ग्रामीण भारत का शैक्षिक एवं आर्थिक पिछड़ापन–बलभद्र बिरुवा 3557

काव्यप्रकाश की लीला टीका एवं उसकी पाण्डुलिपियां–भारतेन्दु पाण्डेय; गिरिराज 3560

कुमाऊँ का अनुपम जलस्त्रोतः नौला (भूतल के जल)–हंसा वर्मा; डॉ० सरोज वर्मा 3565

बेरोजगारी समस्या के समाधान हेतु मनरेगा कार्यक्रम–सुनीता कुमारी 3570

माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता का कार्य संतुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन–ज्योति विजय; डॉ० चंद्रकान्त शर्मा 3576

भारतीय संसदीय लोकतंत्र का बदलता स्वरूपः एक विश्लेषण–मनीषा 3580

कारू नाडु (उत्तरी कर्नाटक) को पृथक राज्य बनाने की मांग (उत्तरी कर्नाटक से विश्वासघात की कहानी)–सर्वजीत सिंह राणा; डॉ० अखिल गोयल 3583

दुकानों में प्रोसेस्ड पैकेज्ड भोजन के विभिन्न प्रकारों की उपलब्धता का अध्ययनः (पटना क्षेत्र के संबंध में)
–कुमारी सुषमा श्रीवास्तव; प्रो0 (डॉ०) अंजु श्रीवास्तव 3591

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विधार्थीयों की नैतिक मूल्यों पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव पर शोध
–श्रीमती मोहनी सिन्हा; डॉ० रजनी डिवाकर राव सिवणकर 3595

महासमुन्द क्षेत्र के हायर सेकण्डरी स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता अध्ययन–हेमन्त कुमार खटकर; डॉ० रेखा नरेन्द्र जिभकाटे नवखरे 3600

महात्मा फुले की सामाजिक न्याय अवधारणा–मोनिका काकोडिया 3603

असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के मानवाधिकारों के संरक्षण में केन्द्रीय सरकार की भूमिका का एक अवलोकन
–नीतेश कुमार चतुर्वेदी; प्रो० सुदर्शन वर्मा 3607

भारत में प्राकृतिक आपदा के समय राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान की भूमिका का अध्ययन–संदीप सेन 3612

पश्चिमोतर भारत में पारसियों का आगमन तथा भारतीय समाज पर उनका प्रभाव–सारिका दुबे 3615

मध्यप्रदेश में भारतीय होटल उद्योग में लागू सेवा गुणवत्ता मॉडल का अध्ययन–डॉ० डी०एन० पुरोहित; श्रीमति शीतल तिवारी 3620

भारत में ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा–रूबी सिंह; डॉ० वी० के० गैलत 3629

दिल्ली सल्तनत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति–डॉ० स्वर्ण मणि 3632

भारत और सिंगापुर के सांस्कृतिक संबंधः एक ऐतिहासिक अवलोकन–आशा कुमारी सिन्हा; डॉ० सुनीता शर्मा 3636

हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान

डॉ० कनुभाई बिछिया भाई निनामा

कला संकाय, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात

ओमप्रकाश

रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा, गुजरात

1.1 सार-

स्वातन्त्र्योत्तर कथाकारों में अमरकांत का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अमरकांत जिस सादगी और व्यंग्य की प्रच्छन्न अन्तर्धारा के साथ अपने आस-पास की मध्यवर्गीय जिन्दगी पर लिख रहे थे। वस्तुतः उसी कारण वे नई कहानी में अपनी अलग पहचान बना रहे थे। वे अपनी लेखकीय दायित्व के प्रति पूरी तरह जागरूक कथाकार थे। सामाजिक, नैतिक अवमूल्यन के दौर में स्ती-पुरुष संबंधों के बीच जो बदलाव आया है और जिस तरह आधुनिकता का समावेश हुआ है उसे अपनी कहानी और उपन्यास में अभिव्यक्त करने की सार्थक कोशिश की है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में रूढ़ अंधविश्वासों और थोथे आदर्शवाद को तोड़ने का काम किया है, वहीं आस्था, विश्वास और प्रेम की ताकत को भी अभिव्यक्ति दी है। मध्यवर्ग की नब्ज को किसी ने पकड़ा है तो वे अमरकांत हैं।

1.2 प्रस्तावना-

अमरकांत के कथा साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ विविध रूपों में झांकता दिखायी देता है। उन्होंने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में मध्यवर्गीय परिवार की व्यथा, आर्थिक तंगी, बच्चों की अधिकता की स्थिति, बेरोजगारी, बीमारी, टोना-टोटका, सफेदपोशी के लिए संघर्ष, पर्यटन में किफायत, मध्यवर्गीय मुहल्लों की समस्या, मकान की परेशानी, निजी मकान पर गर्व, मध्यवर्गीय परिवारों में वृद्धावस्था, स्नेह का अभाव, मध्यवर्गीय प्रेम, मध्यवर्ग का अफसोस, मध्यवर्ग की सिद्धान्तवादिता, मध्यवर्गीय राजनीति, मध्यवर्ग का विकास कार्यों में संलग्नता आदि का यथार्थ व जीवन्त चित्र उपस्थित किया है। अमरकांत के कथा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता वातावरण के निर्माण में उनकी सार्थकता है। अपनी बात कहने के लिये जिस वातावरण का निर्माण करते हैं, उसमें इतनी यथार्थता और स्वाभाविकता होती है कि कहीं कोई आरोपण प्रतीत नहीं होता। वस्तुतः उनकी कहानियों में जीवन की इतनी गहरी पकड़ है कि वह स्वतः बोलती है तथा उन्हें चौंका देने की प्रवृत्ति का सहारा नहीं लेना पड़ता। उनका शिल्प सीधा-सादा और सहज है। आपकी दृष्टि सीधे यथार्थ को पकड़कर सत्यान्वेषण के प्रति सजग रहती है और इसमें उनको सफलता भी मिली है। उनके अनुसार साहित्य का उद्देश्य सदैव सामाजिक उद्देश्य होता है। कल्याणकारी मानवता की भावना में सामंजस्य उपस्थित करना साहित्य का उद्देश्य है।

प्रख्यात समीक्षक डॉ0 नामवर सिंह ने कहा है कि "अमरकांत ने अपनी कहानियां मध्यवर्गीय परिवारों से उठायी हैं और इस तरह हमारी आंखों में जिंदगी के जाने-अनजाने कितने पर्दे उठ गये हैं। इस क्षेत्र में अमरकांत की कहानियां किसी भी नये लेखक के लिये चुनौती है।" कहानी के विकास के हर दौर में अपने लेखन की प्रासंगिकता का दावा करने वाले कथाकार उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने कहा है कि जिन्दगी की पकड़ अमरकांत की अचूक है और अभिव्यंजना अत्यन्त सरल और उनकी कहानियां सरल, सोद्देश्य व प्रगतिशील, उच्चकोटि की है। डॉ0 इन्द्रनाथ मदान ने कहा है कि 'इनके करारे व चुभते व्यंग्य और इनकी मीठी-मीठी चुटकियाँ इनकी कहानी कला को विशेष बनाती है। भैरव प्रसाद गुप्त ने कहा है कि अमरकांत ने बिना आज की नयी कहानी की कोई भी चर्चा अधूरी है।....अमरकांत की कहानियों का निर्माण जीवन्त वस्तुशिला पर होता है। इसलिये वे पत्थर की तरह ठोस व कंक्रीट की तरह शक्ति-संबंध होते हैं। इसलिये जाहिर है ये टिप्पणियाँ दीर्घ कालावधि में संपन्न अमरकांत के संपूर्ण रचना कर्म के अलग-अलग पक्षों पर ही रोशनी डालती हैं और उनको समग्र रूप में नहीं उठाती हैं। लेकिन ये उनके सम्पूर्ण रचनाकर्म के मूल्यांकन के उन आधारों की ओर अवश्य इंगित कर देती है जिस पर उसे व्याख्यायित किया जा सकता है। मसलन यह कि अमरकांत की कहानियों में मध्यवर्गीय परिवार की जिंदगी के अधिसंख्य अनुद्घाटित पक्ष उद्घाटित हुए हैं, उनकी कहानियों में यथार्थ की पकड़ बहुत गहरी लेकिन अभिव्यक्ति अत्यन्त सरल है, उनका व्यंग्य उन्हें विशिष्ट बनाता है और उनकी वस्तु-योजना अत्यन्त सोद्देश्य और सप्रयोजन है। इन आधारों को ध्यान में रखकर ये पता लगाना आसान होगा कि उनकी कहानियां या उपन्यास किस हद तक कहानीकार की या उपन्यास की ऐतिहासिक दृष्टि सम्पन्नता का परिचय देती हैं। अतीत को नकार कर अपने समय और परिवेश को कितनी गहराई और व्यापकता में पकड़ती है और उसके प्रति उनका सरोकार और सलूक कैसा है तथा वे अपनी रचनाकालीन तत्कालिकता किस सीमा तक मुक्त होकर सम्पूर्ण समकालीन संदर्भ में अपनी जीवंतता तथा सार्थकता से प्रासंगिक बनती हैं।

''अमरकांत के बारे में उपेन्द्र नाथ 'अश्क' का मत विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनका कथन है कि अमरकांत की अभिव्यक्ति सरल, जिन्दगी की पकड़ मजबूत, निगाह गहरी और व्यंग्य पैना है। अमरकांत वस्तु के चुनाव में सतर्क हैं। पर शिल्प के सौष्ठव में अल्हड़। कब बहुत अच्छी बनती-बनती कहानी साधारण उतर जाये और कब खाखी में लिखी बहुत अच्छी बन जाये, इसका कोई भरोसा नहीं।''

निःसंदेह समकालीन रचनाकारों में जैसे-जैसे संवेदनात्मक ज्ञान बौद्धिक होता गया, उसके प्रगतिशील आयाम अधिक सूक्ष्म और जटिल होती गयी। हिन्दी लेखन के क्षेत्र में निरंतर प्रगतिशील विकास होता रहा है। कथा-रचनाओं में सर्जक की सजगता से उत्पन्न प्रगतिशील चेतना अथवा जीवन दृष्टि के उपन्यास बिन्दु इसके प्रमाण हैं।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथाकारों में अमरकांत की कहानियों में निम्न मध्यवर्गीय कस्बाई समाज का परिवेश पहली बार शायद अपनी सम्पूर्णता के साथ उभरा है। गाँवों से शहरों की ओर भागती हुई चेतना तथा शहरों एवं गाँवों के परस्पर एक रूप होने की प्रक्रिया को अमरकांत ने जितनी सुगमता व सहजता से पकड़ा है, शायद अन्य कथाकारों की रचनाओं में अत्यन्त दुर्लभ है।

शेखर जोशी, धर्मवीर भारती, हृदयेश, शानी आदि कथाकारों में यह दृष्टि का सम्यक् विस्तार इन कथाकारों में नहीं मिलता। नयी कहानी आंदोलन के दौर में जब अमरकांत एक बेहद संभावनापूर्ण लेखक के रूप में अपनी पहचान बना रहे थे। 'सूखापत्ता' (1959) नामक उनका उपन्यास लोगों का ध्यान खींचता है। अपनी कहानियों की तरह अमरकांत अपने उपन्यासों में निम्नमध्यवर्गीय जीवन को संवेदनशीलता के साथ अंकित करते हैं। सूखापत्ता के बाद उनके अन्य महत्त्वपूर्ण उपन्यासों में 'ग्राम सेविका', 'कंटीली राह के फूल', 'काले उजले दिन' (1969) और 'दीवार और आंगन' (1969) आदि का उल्लेख किया जा सकता है। अपने उपन्यासों में अमरकांत अपनी कहानियों से भिन्न, मूलतः रोमानी भावदशाओं के लेखक हैं। 'सूखापत्ता' में वे क्रान्तिकारियों के प्रति इसी रोमानी और कैशोर आकर्षण को अनुभव करते हैं। इसका किशोर नायक कृष्ण कुमार क्रान्तिकारियों की ओर आकृष्ट होकर स्वयं एकदल के संगठन का प्रयास करता है। लेखक क्रांतिकारी चेतना का कोई विवेकपूर्ण उपयोग नहीं कर सका है और कृष्ण कुमार तथा उर्मिला के प्रेम संबंधों में उलझ जाता है। कंटीली राह के फूल का अनूप भी किसी पड़ोसी गाँव से आकर विश्वविद्यालय में प्रवेश करने वाला नवयुवक है। खिड़की फांदकर कक्षा छोड़ना और रिक्शे पर आती-जाती लड़कियों का पीछा करना उसने भी शुरू कर दिया है। अनूप और कामिनी के प्रेम के सहारे ही उपन्यास विकसित होता है। कामिनी को विश्वास है कि अनूप उसके सम्मान की रक्षा के लिये संघर्ष कर सकता है। उपन्यास का शीर्षक कामिनी की आस्था और अंतर्दृष्टि को तो व्यंजित करता ही है, इसी नाम की संस्था का संदर्भ भी उसमें समाहित है। वस्तुतः यहीं से लेखक की दृष्टि एक से अनेक, व्यक्ति से समाज और राष्ट्र की ओर मुड़ती है, नयी पीढ़ी के परिश्रम, कर्मठता और ज्ञान के अन्वेषण की आकांक्षा को ही इस संस्था के उद्देश्य के रूप में रेखांकित किया गया है। लेकिन व्यवहार के स्तर पर उपन्यास में इनके लिये कहीं किसी प्रकार का प्रयास नहीं दिखायी देता। 'काले उजले दिन' एक मध्यवर्गीय युवक के घटनाहीन जीवन की सपाट कहानी है। परिवार में विमाता की उपस्थिति के परिणाम स्वरूप उसके व्यतिव का विघटन उसके स्वाभाविक विकास में बाधक बनता है। पत्नी कान्ती के सारे त्याग और बलिदान के बावजूद वह उसे प्रेम नहीं कर पाता। उसके इस लम्बे काले दिन में उसकी सहयोगिनी रजनी उजाला बनकर उपस्थित होती है।

रजनी उसे सम्पूर्ण मन से प्यार करती है। लेकिन उसके जीवन की वास्तविकता जानकर वह ईमानदारी से उससे बाहर निकलना चाहती है क्योंकि वह कांति को धोखा नहीं देना चाहती। कांति त्याग और सेवाभावी स्तियों की परम्परा में अपनी अति रंजनाओं के कारण ही विशिष्ट है। रजनी एक खुलेमन की कामकाजी युवती है। कांति की मृत्यु उसे फिर रजनी के निकट आने का अवसर मुहैया कराती है। रूढ़ियों और अंतर्विरोधों वाले निम्नमध्यवर्ग की यह कहानी सपनों और रोमानी कल्पनाओं के सहारे विस्तार पाती है। समाज में पुरुष के वर्चस्ववादी रूप और उसके द्वारा पत्नी को पहुँचाये जाने वाले नुकसान का उल्लेख किसी गहरे रचनात्मक उपयोग का प्रमाण नहीं बन सका है। अमरकांत अपने इन उपन्यासों में निम्नमध्यवर्गीय मानस को पर्याप्त सहज और विश्वसनीय रूप में अंकित करने की कोशिश करते हैं। 'सूखापत्ता' में वे अंतर्जातीय विवाह को स्वीकृति नहीं दे पाते। 'ग्रामसेविका' में साम्यवादी आन्दोलन की दुर्बलता के कारण गांधीवादी जीतता दिखायी देता है। 'दीवार और आंगन' में आंगन उन्मादी देहाकांक्षा का प्रतीक है जो अंततः प्रेम की दीवार से संयत और नियंतिर्त होती है। लेकिन कुल मिलाकर उनके ये उपन्यास कोई गहरा कलात्मक प्रभाव नहीं डालते। उनकी कहानियों का मूलभूत वैशिष्ट्य यहाँ सिरे से गायब है। जगह-जगह पर सिर्फ उनकी क्षमताओं के स्फुलिंग चमकते दिखायी देते हैं। जो किस्सागोई और प्रेम कहानियों की रोचकता में दबकर बुझ जाते हैं। अपनी टिप्पणी में मुक्तिबोध ने आधुनिक लेखक के संदर्भ में जिस उन्मूलितावस्था, अजीबोगरीब व्यक्तित्व और अकेलेपन की चर्चा की है। स्वाधीन भारत में जो और जैसी स्तियाँ तेजी से विकसित हुई थीं उनमें लेखक गहरे आत्मसंघर्ष के बाद ही उनसे बच सकते थे। अपने सिलसिले में स्वयं मुक्तिबोध ने ऐसे आत्मसंघर्ष की चर्चा की भी है। जो लेखक अधिक अध्ययनशील और यूरोपीय प्रभावों के लिये खुले थे, उनके लिये यह संकट और भी स्वाभाविक था।

शीतयुद्ध के उस दौर में सोवियत संघ का विरोध इन लेखकों के लिये सबसे बड़ा रचनात्मक मुद्दा था। चूंकि इससे उन्हें लेखक के व्यक्तित्व स्वातंत्र्य पर जकड़बन्दी का बोध होता था, इसके विरोध को वे विचार और विचारधारा के निषेध तक ले जाते दिखायी देते हैं। जो लेखक मुक्तिबोध की तरह गहरे आत्मसंघर्ष की आँच नहीं सह सके, उनका पिघल जाना ही उनकी एक स्वाभाविक परिणति थी।

1.3 अमरकान्त का उपन्यास विधा में स्थान

साहित्य में जिस उपन्यास विधा से हम परिचित हैं वह आधुनिक युग की देन है। अंग्रेजी के 'नॉवल' (छवअमस) शब्द का प्रयोग हिंदी में उपन्यास के लिए किया जाता है। 'न्यू इंगलिश डिक्शनरी' में नॉवल की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-''नॉवल वह विस्तृत गद्यात्मक आख्यान प्रधान रचना है जिसमें वास्तविक जीवन का अनुकरण करने वाली घटनाओं और पात्रों का एक व्यवस्थित कथावस्तु के रूप में वर्णन रहता है।'' पाश्चात्य विद्वानों ने उपन्यास के संबंध में अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। ''रॉल्फ फॉक्स ने उपन्यास को महाकाव्य की अनवर्ती विधा मानते हुए भी, बदले हुए समय में उसकी भूमिका को अधिक क्रांतिकारी माना है क्योंकि उसका लक्ष्य है नये मानव की आवश्यकताओं को पूरा करना और उसकी आशा, आकांक्षाओं को व्यक्त करना तथा उसकी तूफानी दुनिया को चित्रित करना।''रॉल्फ फॉक्स ने उपन्यास को बुर्जुआ साहित्य की सबसे श्रेष्ठ रचना के रूप में देखते हुए मानव-जीवन और साहित्य के बीच मजबूत संबंधों का मूल्यांकन किया है।

अर्नेस्ट ए. वेकर के अनुसार-''गद्यमय कल्पित आख्यान द्वारा जीवन की व्याख्या है।''जार्ज मूर ने उपन्यास की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है-''उपन्यास समकालीन इतिहास के अतिरिक्त और कुछ नहीं। जिस युग में हम जी रहे हैं, उसके सामाजिक पक्ष का बिल्कुल पूर्ण और सही-सही पुनर्निर्माण है।''जार्ज मूर का मानना है कि उपन्यास समाज के संबंध में चिंतन-मनन करके अध्ययन करने वाला, समय की अपेक्षा करने वाला साहित्य है। साथ ही वे इसे जीवन के सत्यों को हू-ब-हू उद्घाटित करने वाला मानते हैं। वैब्स्टर ने उपन्यास की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए उसे इस प्रकार परिभाषित किया है-''उपन्यास एक ऐसा कल्पित, विशालकाय और गद्यमय आख्यान है जिसमें एक ही कथानक के अंतर्गत यथार्थ जीवन का निरूपण करने वाले पात्रों और उनके क्रियाकलापों का चित्रण किया जाता है।''इसी संदर्भ में पर्सी ल्यूब्बाक की उक्ति है-''जो अपने प्रतिपाद्य विषय के प्रति अधिकाधिक न्याय करे, उपन्यास के स्वरूप की इसके अतिरिक्त कोई परिभाषा नहीं है।''उपर्युक्त पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई उपन्यास की परिभाषा उपन्यास के स्वरूप को समझने में एक दृष्टि प्रदान करती है। उपन्यास को भारतीय विद्वानों ने भी परिभाषित करने की कोशिश की है जिनमें से कुछ परिभाषाएँ कुछ इस प्रकार है-

हिंदी उपन्यास को परिभाषित करते हुए रणवीर रांगा लिखते है-''उपन्यास शब्द 'उप' और 'नि' पूर्वक 'अस्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय जोड़ने से व्युत्पन्न हुआ। 'अस्' का अर्थ होता है- रखना, स्थिर रखना, प्रक्षेपण करना आदि। इसी आधार पर उपन्यास शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ हुआ- ''वह रचना जिसमें जीवन के अनेक पक्षों का प्रक्षेपण किया गया है।''इस प्रकार उपन्यास जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करने वाली विधा है।

'हिंदी साहित्य कोश' में उपन्यास के संबंध में लिखा है-''यह शब्द 'उप' = समीप तथा 'न्यास' = थाती के योग से बना है, जिसका अर्थ हुआ(मनुष्य के) निकट रखी हुई वस्तु अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिंब है, इसमें हमारी ही कथा, हमारी ही भाषा में कही गयी है।''

महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद मानते हैं कि उपन्यास वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। इसलिए वे लिखते हैं-'' मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर पकाश डालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मूल तळव है।''

डॉ. भगवतस्वरूप मिश्र ने उपन्यास को यथार्थ का प्रतिबिंब और समाज सापेक्ष मानते हुए कहा है-''युग की गतिशील पृष्ठभूमि यथार्थ शैली में स्वाभाविक जीवन की एक व्यापक झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्यकाव्य उपन्यास कहलाता है।''उपन्यास का संबंध मनुष्य के सामाजिक जीवन व युग से ही नहीं; बल्कि वह मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को यथार्थ रूप में चित्रित करके साहित्य में उसे चिरस्थायी भी बनाता है। जबकि अन्य विधाओं में यह संभव नहीं हो पाता है। इसी संदर्भ में आचार्य नंददुलारे बाजपेयी ने कहा है-''साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास ही एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा सामूहिक मानव-जीवन अपनी समस्त भावनाओं और चिंताओं के साथ संपूर्ण रूप से व्यक्त हो सकता है। मानव-जीवन के विविध चित्रों को चित्रित करने में जितना अवकाश उपन्यास में मिलता है उतना अन्य किसी साहित्यिक उपकरणों में नहीं।''

उपन्यास के संबंध में हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं-''उपन्यास नामक साहित्यांग केयथार्थवादी होने में ही मैं उसकी सफलता मानता हूँ।''इस प्रकार हजारी प्रसाद द्विवेदी उपन्यास में यथार्थवाद के गुण को आवश्यक मानते हैं, जो निर्विवाद है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपन्यास मानव-जीवन के प्रत्येक पहलुओं को यथार्थ रूप में चित्रित करने वाली विधा है। यह एक ऐसी विधा है जो समाज की जटिल समस्याओं को ही नहीं; बल्कि उस जटिल समस्या का समाधान भी खोज कर निकालती है। जीवन और जगत् का यथार्थ उपन्यास में जितनी सच्चाई से उद्घाटित होता है उतना अन्य किसी विधा में नहीं होता है। यही कारण है कि आज उपन्यास निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है और आधुनिक साहित्यिक विधाओं में प्रमुख है।

उपन्यास के माध्यम से हम मानव जीवन के हर एक पहलुओं से जुड़ते हुए गहराई से देखते-परखते एवं अनुभव करने लगते हैं। उपन्यास मानव जीवन के पुराने पक्षों का ही नहीं; बल्कि नए विकसित होने वाले पक्षों व दिशाओं को भी अभिव्यक्त करता है। मानव जीवन की तरह उपन्यास को भी परिभाषित करना जटिल ही प्रतीत होता है। अत: ''उपन्यास को जादू-टोना, अय्यारी, तिलिस्म से लेकर

धर्मोपदेश, समाज-सुधार, नैतिक शिक्षा, इतिहास, विभिन्न राजनीति विचारधाराओं और दार्शनिक मस्तिष्क की उलझनों, यौन संबंधों की जटिलताओं और समाज की विकृतियों तक का बोझढोना पड़ता है।''

''अन्य विधाओं की अपेक्षा उसका स्वरूप 'लूज' है, इसलिए उसमें अपने भीतर सब कुछ समाविष्ट कर लेने की क्षमता होती है।''उपन्यास मानव जीवन की उलझनों, मानवीय क्रिया कलापों, चरित्रों के गुण-दोषों को, प्रतिदिन घटित होने वाली घटनाओं को एवं यथार्थ के विभिन्न पक्षों को ही नहीं; बल्कि भाषा व संवाद की वक्रता, वातावरण परिवेश का भी सूक्ष्मता से चित्रित करता है। उपन्यास में विस्तार रूप उपस्थित होने के साथ-साथ जीवंतता के गुण भी विद्यमान होते हैं। जिस प्रकार एक दर्पण में व्यक्ति अपना प्रतिबिंब स्पष्ट देख लेता है, उसी प्रकार उपन्यास में मानवीय जीवन के विविध पहलुओं को स्पष्ट देखा जा सकता है। अत: उपन्यास जीवन-दर्पण है जिसमें जीवन का विशाल रूप स्पष्ट परिलक्षित होता है।

1.4 निष्कर्ष-

अत: यह कहा जा सकता है कि अमरकान्त जी के ''कथा-साहित्य हमेशा से बुद्धिजीवी और मध्यवर्ग का महाकाव्य रहा है। जिये जाने वाले जीवन के प्रति उसकी तत्कालीक प्रतिक्रिया कथा साहित्य में सबसे अधिक होती है।''इसीलिए हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रारंभ से ही मध्यवर्ग के जीवन-शैली, चरित्र, विभिन्न समस्याओं और उसके समाधान आदि का सफल चित्रण होता है। मध्यवर्गीय जीवन से जुड़े आर्थिक संकटों, संबंधों में बढ़ती जटिलता, दाम्पत्य जीवन की कड़वाहट, नारी की विवशता, परिवेश के प्रति क्षोभ, भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने की छटपटाहट, कुंठाओं, आकांक्षाओं आदि समस्याओं को इस युग के उपन्यासकारों ने स्थान दिया है। साथ ही मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलुओं व रूपों का चित्रण प्रस्तुत किया है। अभी भी कितने ही पक्ष शेष हैं जिनका चित्रण होना बाकी है; क्योंकि मध्यवर्गीय जीवन का विषय विस्तार व्यापक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

- डॉ0 एलाङ्बम विजयलक्ष्मी, समकालीन हिन्दी उपन्यास: समय से साक्षात्कार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2006
- डॉ. गोपाल कृष्ण अग्रवाल, सामाजिक विघटन, एस बीपीडी पब्लिशिंग हाउस, आगरा, ग्यारहवाँ संस्करण-2010
- डॉ0 जय जय रामउपाध्याय, भारत का संविधान, सेन्ट्रलला एजेन्सी इलाहाबाद-2013
- वीरेन्द्र यादव, प्रगतिशीलता के पक्ष में, साहित्य भण्डार, इलाहाबाद प्रथम संस्करण-2014
- उषा प्रियम्बदा, रूकोगीनहींराधिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सातवीं आवृत्ति- 2010
- अमरकांत, बीच की दीवार (उपन्यास), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण- 2008
- अमरकांत, काले-उजलेदिन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति-2014
- अमरकांत, कुछ यादें, कुछबातें (संस्मरण), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति-2014
- फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आँचल, राजकमलप्रकाशन, नई दिल्ली, ग्यारहवीं आवृत्ति-2006
- नामवर सिंह, कहानी: नई कहानी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण-2012
- अमरकांत, सुन्नर पांडे की पतोह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति-2015
- अमरकांत, अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियां (दूसरा खंड), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2013
- अमरकांत, इन्हीं हथियारों से, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति-2014